भूमिका

किसी भी समाज की पहचान उसके परिवर्तनशील गुणों से की जाती है। समाज में होने वाले ये परिवर्तन स्वाभाविक और अस्वाभाविक प्रकृति के होते हैं। इन्ही परिवर्तनों में कुछ सकारात्मक होते हैं और कुछ नकारात्मक किन्ही परिस्थितियों में यह परिवर्तन अवरूद्ध हो तो समाज के सजग प्रहरी और लोकतंत्र के चौथे स्तंभ, मीडिया का दायित्व बनता है इनके कारणों का पता लगाना। साथ ही कारणों की पड़ताल कर पुनः समाज की गतिशीलता को स्थापित करना । वर्तमान में यह बहस छिड़ी है कि मीडिया अब मिशन नहीं रहा यह एक व्यवसाय या पेशा बनकर रह गया है। पेशा होने के कारण सभी दिशाओं से केन्द्र में लाभार्जन का उद्देश्य मीडिया की विभिन्न धाराओं में देखा जा सकता है। ज्यादतर लोगों का मत इसे व्सवसाय मानता है। पत्रकारिता को अगर व्यवसाय मान भी लिया जाय तो यह अन्य व्यवसायों से अलग है। इसकी यही भिन्नता इसकी विशिष्टता है। लेकिन इस बात को मानने से भी गुरेज नहीं किया जा सकता कि वर्तमान समय में मीडिया का चरित्र बहुत तेजी से बदल रहा है। निरंतर इसका व्यवसाय क्षेत्र एवं प्रभाव क्षेत्र बढ़ता ही जा रहा है। इन्ही उपरोक्त बिन्दुओं के संदर्भगत प्रस्तुत शोध हिन्दी के सबसे बड़े अखबार दैनिक भास्कर की बिहार में समाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक उन्नति में भूमिका की पड़ताल है।

पत्रकारिता, क्रांति नहीं लाती यह अपने समय का दस्तावेज है अर्थात् रोज का जीवंत इतिहास। देखने वाले के अनुसार सच के अनेक पक्ष हो सकते हैं, परंतु तथ्यों के कई रूप नहीं होते यह वस्तुनिष्ठ होता है। कोई भी अखबार या मीडिया हाउस ईमानदारी से अपने समय के अधिकाधिक तथ्य दर्ज करे, पत्रकारिता का मूल धर्म बस इतना ही है। बशर्ते इन तथ्यों के संकलन में किसे रखना है और किसे छोड़ देना इसका निर्णय वह बिना किसी पूर्वाग्रह से करता हो। बिना लाग-लपेट के ईमानदारी से समाचार पत्र और पत्रकार यही करें, तो निश्चित मानिए, देर-सबेर सूरते हाल बदल जाएगा । किसी भी समाचार पत्र और पत्रकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि किसी भी अड़चन के बावजूद वो इन रास्तों पर चले।

पूरी मीडिया के सामने आज गंभीर चुनौतियां हैं। इन सवालों पर सार्वजनिक चर्चा जरूरी है। इसके साथ ही समाज और पाठकों का सार्थक हस्तक्षेप भी इन मुद्दों को लेकर होना चाहिए। यह स्पष्ट बात है कि बिना आमदनी, व्यवसाय या कारोबार के मीडिया या कोई व्यवसाय नहीं चल सकता। अखबार के प्रबंधनकीय सहयोग के बगैर पत्रकारिता सही धर्म नहीं निभा सकती। पूरे देश में अनेक टीवी चैनल्स या

अखबार घराने अपनी गुणवत्ता, निष्पक्षता, पारदर्शिता के आधार पर विज्ञापन व्यवसाय करते हैं और साथ ही बेहतर एवं उच्चस्तरीय पत्रकारिता भी, परंतु कुछ जगहों पर तस्वीर इसके इतर है। कई जगहों पर खबरों को प्लांट करने कार्य भी किया जा रहा है।जिसका उद्देश्य ताकतवर और पैसेवालों के इशारे पर गलत खबर छापना एवं खबरों से लोगों को धमकाना और पैसे बनाना है।

ऐसे वक्त में समाज को सावधान होना होगा, विज्ञापनदाता को भी सजग रहना होगा। मीडिया की शक्ति और सम्पति गलत हाथों में नहीं जाने पाये इसके उपाय करने होंगे। समाज की यह पहरेदारी, हिंदी इलाके की पत्रकारिता को विश्वसनीय बनाये रखने के लिए ज्यादा जरूरी है। अगर समाज को अच्छी पत्रकारिता चाहिए, तो उसे सजग भी होना पड़ेगा। आज भी हर अखबार में बहुसंख्यक, सजग और अच्छे लोग हैं परंतु कुछेक जगहों पर प्रभावी पदों पर गलत लोग भी हैं। इन चंद गलत लोगों के कारण पत्रकारिता, अपनी चमक, ताप, विश्वसनीयता, ईमानदारी और पारदर्शिता को लेकर कठघरे में रहती है। ये खबरों का धंधा करते हैं। ये तथ्यों के प्रति नहीं, अपनी भ्रष्ट जमात के संरक्षक, मंत्री, ठेकेदार और दलालों के प्रति ईमानदार हैं। ऐसे समाचार पत्र और पत्रकारों के खिलाफ, पत्रकारिता जगत् से ही प्रामाणिक आवाज उठनी चाहिए। जैसे कुछेक वर्ष पहले काशी में हुआ। पत्रकारों के एक समूह जिसमें सभी अखबार के लोग थे इसके खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की थी। पत्रकारों के इस समूह के द्वारा नारा दिया पत्रकारों दलाली छोड़ो, दलालों पत्रकारिता छोड़ो। इस घोष में दो तरह की बातें सामने थी एक तो पत्रकारिता में कुछ लोग ज्यादा पैसा कमाने की चाह में खबरों की दलाली करने लगे हैं वहीं दूसरी तरफ कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनका मूल कर्म ही दलाली था और इसे साधने के लिए उन्होंने पत्रकारिता को जरिया बना लिया है।

पत्रकारिता को सुरक्षित रखने के लिए जरूरी है सजगता। देश में जहां भी पत्रकारिता खतरे में हो या फिर उसकी मर्यादा टूट रही हो वहां पत्रकार या मीडिया संस्थान, अखबार वगैरह बिना समय गंवाये मीडिया की विश्वसनीयता बचाने के लिए आगे आएं। कभी-कभार राजनीतिक हलके के लोग भी पत्रकारिता पर उंगली उठाते हैं, पत्रकार पर आरोप लगाते हैं । कुछेक पाठक भी पत्रकारिता में गिरावट की बात करते हैं। यह सुखद संकेत है परंतु इससे ऊपर उठकर पाठकों को पाठक समूह या क्लब बनाने चाहिए। गलत खबरों पर सवाल उठाने चाहिए। हर स्तर पर सार्थक हस्तक्षेप और विरोध होना चाहिए। यह काम देश के कुछ हिस्सों में हो भी रहा है। अगर पाठक और समाज, पत्रकारिता पर यह अंकुश रखने के लिए तैयार

है, तो पत्रकारिता बेहतर होगी। बेहतर पत्रकारिता ही नयी दुनिया गढ़ने में कारगर होगी। वह पत्रकारिता समाज, राज और व्यक्ति के हित में होगी। पत्रकारिता के संसार में जो भी कमियां हैं, उसके लिए सभी पाठक, विज्ञापनदाता, समाज के हर वर्ग के लोग सत्ता के बाहर-अंदर बैठे रहनुमा और सभी पत्रकार, मिल कर इस दिशा में सोचें और पहल करें। जिससे समाचार पत्र और पत्राकारिता के प्रति व्यक्ति समाज और देश की निष्ठा बनी रहे। पत्रकारिता एक कर्म भी और धर्म भी। इसे बचाये और बनाये रखने से ही लोकतंत्र भी स्वस्थ और मजबूत बना रहेगा।

एक समाचार पत्र का कार्य होता है सरकार से जनता और जनता से सरकार के मध्य विचारों का आदान-प्रदान करना। जनता के अधिकारों की रक्षा और एक स्वस्थ्य जनमत का निर्माण कर एक अखबार लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में स्थापित हो पाता है। मीडिया समाज का आर्थिक, वैचारिक एवं सांस्कृतिक संवाहक होता है। इसके साथ-साथ मीडिया का दायित्व समाज के लिए जरूरी एवं स्वस्थ मनोरंजन भी उपलब्ध कराना है। मीडिया सामजिक विकारों की पहचान एवं उसके बहिष्कार का आधार भी बनता है, जैसे- अभी बिहार में शराबबंदी राज्य सरकार के फैसले से लागू है। ऐसे में एक अखबार सरकार के इस फैसले के उचित और अनुचित प्रभाव के तथ्य समाज के समाने रखेगा। जिससे कि अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति इस फैसले को लेकर ना बने। दैनिक भास्कर 2014 से बिहार में प्रकाशित हो रहा है। तब से अब तक समाज एवं राज्य के कई ऐसे मुद्दे रहे होंगे जिनपर मीडिया रिपोर्ट्स और खबरों का खासा असर देखने को मिला होगा। ऐसे में बिहार की जनता ने राज्य के अन्य महत्वपूर्ण अखबारों के समक्ष दैनिक भास्कर की पत्रकारिता को कैसा पाया,प्रस्तुत शोध में यह जानने की कोशिश की गयी है।

बिहार में हिन्दी भाषा में कई पत्र –पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं जिनमें दैनिक अखबारों में प्रसार संख्या के आधार पर हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर और प्रभात खबर महत्वपूर्ण हैं। सभी अखबारों का पटना संस्करण बिहार राज्य के अन्य संस्करणों से ज्यादा महत्वपूर्ण होता हैं। अपने शोध में मैं बिहार के पटना जिले में दैनिक भास्कर की उपस्थिति की पड़ताल करूंगा। शोध के लिए पटना जिला को आधार बनाने के पीछे उद्देश्य पटना जिले की विशाल और विविधतायुक्त जनसंख्या है। पटना जिला बिहार की राजधानी होने के कारण राज्य की राजनीतिक गतिविधियों का भी केंद्र है। अन्य जिलों की तुलना में इसका साक्षरता दर भी उच्च है।